पाठ 7

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन-प्रतिरोध

लोग विद्रोह क्यों करते हैं ? वे तभी विरोध करते है जब उन्हें अनुभव होता है कि उनके अधिकार छीनें जा रहे हैं | इसका अर्थ है कि सभी प्रतिरोधी आन्दोलन किसी ना किसी प्रकार के शोषण के विरुद्ध प्रारम्भ हुए। अंग्रेजी शासन जिसकी नीतियों ने भारतीयों के अधिकारों, प्रतिष्ठा व आर्थिक स्थिति की अवमानना की वे सभी इस शोषण का प्रतीक थी |

जन विद्रोह व प्रतिरोध के कारण - जब वारेन हेस्टिंग्स ने बनारस पर आक्रमण किया और धन व सेना की अन्यायपूर्ण मांग पूरी करने के लिए राजा चेतसिंह को जेल में डाला तो बनारस के लोगों ने विरोध किया | मद्रास प्रेसिडेंसी में जब अंग्रेजों ने सामन्तों के सैनिक व भूमि अधिकारों को छीनने का प्रयास किया तो उन्होंने अंग्रेजो का विरोध किया | धार्मिक रीती रिवाजों में हस्तक्षेप इन लोकप्रिय आन्दोलनों का एक और कारण था |

जनविद्रोह व प्रतिरोध की प्रकृति

अपना विरोध प्रकट करने के लिए विद्रोहियों द्वारा दमनकारियों के प्रतिरोध में हिंसा व लूटपाट जैसे हथियारों का प्रयोग किया जाता था | निम्न व शोषित वर्ग प्राय अपने शासकों पर आक्रमण करते थे | प्रत्येक सामाजिक वर्ग के पास औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध आवाज उठाने के अपने निजी कारण थे | उदाहरण के लिए जमींदार व शासक अपनी जमीन और संम्प्रदाय पुन: प्राप्त करना चाहते थे | इसी प्रकार जनजातियों के समूहों ने इसलिए विद्रोह किया कि वे नही चाहते थे कि व्यापारी व सूदखोर उनके जीवन में हस्तक्षेप करें |

19 वीं शताब्दी में किसानों व जनजातियों के विद्रोह

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 1760 की कालावधि से शुरू करें तो सन्यासी विद्रोह तथा बंगाल व बिहार में मछुआरों के विद्रोह तक शायद ही कोई वर्ष होगा जिसमें कोई भी सैनिक विद्रोह नही हुआ | 1763 से 1856 तक 40 मुख्य विद्रोह हुए | यह सभी विद्रोह स्थानीय ही थे पर अपनी विशिष्टताओं व प्रभाव की दृष्टि से भिन्न-भिन्न थे |

किसान विद्रोह :-

स्थायी व्यवस्था (परमानेंट सैटलमेंट) ने जमीदारों को भूमि का स्वामी बना दिया परन्तु यदि वे समय पर लगान नही भरते तो उनकी जमीन को ऊँची बोली लगाने वालों को बेच दिया जाता था | अत: जमीदार व भू-स्वामी किसानों से धन छीनने को मजबूर हो गए | चाहे उनकी सारी फसल नष्ट हो गई हो | किसान प्राय: ऋणदाताओं से ऋण लेते थे | जिन्हें महाजन कहा जाता था | इस स्थिति से बाहर आने के लिए किसानों ने अब नील, गन्ना, पटसन, कपास, अफीम जैसी व्यापारिक फसलों की उपज शुरू की थी व यही से कृषि का वाणिज्यकरण शुरू हुआ अंततः खाधान्नों की कमी हो गई व अकाल पड़ने लगा व भूखे लोगों ने विद्रोह शुरू कर दिये |

फ़क़ीर व सन्यासी विद्रोह (1770-1820) - फ़क़ीर बंगाल में घुमंतु धार्मिक मुसलमान भिक्षुकों के समूह थे | दो प्रसिद्द हिन्दू नेताओं ने इनका समर्थन किया | वे थे भवानी पाठक व देवी चौधरानी। इन्होंने अंग्रेजों के कारखानों पर धावा बोला व उनका सामान, नकदी, शस्त्र व बारूद छीन लिए। मंजनू शाह इनके प्रमुख नेताओं में से एक थे | अंतत 19 शताब्दी के प्रारंभ में इन विद्रोहों को नियंत्रित किया जा सका। सन्यासी विद्रोह की घटनायें बंगाल में 1770 से 1820

के मध्य हुई। 1770 के भीषण अकाल के बाद बंगाल में सन्यासियों के विद्रोह उभरे। जिनके करण अत्यंत अव्यवस्था व गरीबी फैल गई | तथापि विद्रोह का तत्कालीन कारण था हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को उनके तीर्थस्थलों पर जाने वाले तीर्थयात्रियों पर अंग्रेजी सरकार द्वारा लगाये जाने वाले प्रतिबन्ध थे।

नील विद्रोह (1859-1962) - अंग्रेजों ने किसानों और जमींदारों पर भारी कर अदा करने व वाणिज्यिक फसलें उगाने के लिए गहरा दबाव डालना शुरु कर दिया | नील की खेती का निर्धारण अंग्रेजों के कपडा बाजार के अनुरुप ही किया जाता था। नील की खेती करने वालो में मुख्य तीन कारणों से असंतोष था |

नील उगाने के लिए उन्हें बहुत कम भुगतान किया जाता था।

नील की खेती व खाद्यान्न फसलों की बोने की अवधि एक ही थी।

नील की खेती से मिट्टी की उर्वरा शक्ति समाप्त हो रही थी।

फलस्वरूप देश में खाद्यानों के भंडार का अभाव हो गया | किसानों को व्यापारियों व दलालों के हाथों परेशान होना पड़ा व अपना सामान सस्ते दामों में बेंचना पड़ा | वहीं जमींदारो को अपना वर्चस्व बनाये रखने और उनके द्वारा शासित क्षेत्रों में उनकी समस्याओं के समाधान हेतु समर्थन किया | हिन्दू व मुसलमान किसानों ने नील की खेती नही करने का अभियान चलाया | हड़ताल की व मालिकों पर क़ानूनी केस दर्ज करा दिए | प्रेस व मिशनरियों ने इसका समर्थन किया |अन्ततः 1860 में सरकार ने आदेश जारी किया जिसमें अधिसूचित किया गया कि रैय्यतों को नील की खेती करने के लिए बाध्य करना गैर -क़ानूनी है।

फरायजी आन्दोलन:- (1838-1848) यह अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध सर्वप्रथम “कोई कर नहीं” दिए जाने सम्बन्धी अभियान था। जिसका नेतृत्व शरायतुल्लाह खान व दादू मियां ने किया। इनके स्वयंसेवकों की टुकड़ियों (बैउस) ने नील बागन के मालिकों और जमींदारों से बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध किया। इसने बंगाल के सभी खेतिहरों को भू-स्वामियों के अत्याचार व गैर क़ानूनी वसूलियों के विरुद्ध एकजुट कर दिया।

जनजातीय विद्रोह:- एक अन्य समूह जिसने अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया वे थे जनजातिय लोग | जमीन व जंगल उनकी जीविका के मुख्य साधन थे | जनजातिय समुदाय गैर जनजातिय समुदाय से बिल्कुल अलग-अलग रहते थे | अंग्रेजी नीतियां जनजाति समुदायों के लिए हानीकारक सिद्ध हुई | इसने उनकी अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था व समुदायों को नष्ट कर दिया | यह लोग पारम्परिक हथियारों विशेष रूप से धनुष बानो का उपयोग करते थे | अक्सर हिंसक हो जाते थे | अंग्रेजों ने सख्ती से इनका दमन किया | इन्हें अपराधी व समाज विरोधी घोषित कर दिया | इतना ही नहीं इनकी सम्पतियों पर कब्ज़ा कर इन्हें जेलों में डाल दिया व कइयों को फांसी पर चढ़ा दिया |

1 संथाल विद्रोह (1855 - 1857) :- संथालों के गढ़ को दमन-ए-कोहथा संथाल परगना कहा जाता था | जो बिहार के भागलपुर से दक्षिण में उड़ीसा तक हजारीबाग से बंगाल सीमा तक विस्तृत था यह लोग शांति पूर्ण अपना जीवन यापन कर रहे थे | जमींदार व साहूकारों ने अंग्रेजों से तंग आकर उनके खिलाफ शस्त्र उठा लिए | इनका नेतृत्व सिदधू व कानू का रहे थे | दुर्भाग्यवश इस असमान स्तर की लड़ाई में संथाल विद्रोह का दमन कर दिया गया | परन्तु कृषक संघर्षो के लिए यह विद्रोह प्रेरण सत्रोत बन गया |

2 मुंडा विद्रोह (1899 - 1900) - पारम्परिक रूप से मुड़ाओं को जंगलों की सफाई करने के रूप में कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे | जिसे किसी अन्य को नही दिया जाता था परन्तु अंग्रेजों की ठेकेदारी प्रथा ने इन्हें विद्रोह करने पर मजबूर कर दिया | जिसका नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया व जनजाति के लोगों को पवित्र वृक्ष कुंजो की पूजा की प्रथा को बनाये रखने का सन्देश दिया। 1900 में मुंडा की जेल में मत्यु हो गयी व यह विद्रोह दब गया परन्तु इस विद्रोह के परिणामस्वरूप ही 1908 में छोटा नागपुर काश्तीकारी अधिनियम (टीनेंस एक्ट) के अधीन लोगों को भूमि पर कुछ स्वामित्व प्रदान किया व जनजातियों की बंधुआ मजदूरी पर रोक लगा दी गयी।

3 जयंतियों व गारों का विद्रोह (1860 - 1870)

प्रथम एग्लो बर्मा युद्ध के बाद अंग्रेजों ने ब्रहमपुत्र घाटी (असम) को सिल्टट (बगंलादेश) से जोड़ने हेतु सड़क योजना बनायी | जिसका जयनियों व गारों ने विरोध किया तो अंग्रेजों ने इनके घर जला दिये व 1860 में गृहकर व आयकर शुरू कर दिये | अत: शत्रुता और बढ़ गयी और जयंतियों का नेता यू- कियांग नागवाह को सार्वजनिक रूप से फांसी दी गयी व गारों का नेता लोमान संगमा अंग्रेजों से हार गया।

4 भीलों का विद्रोह (1818 - 1831) भील श्वानादेश (आज का महाराष्ट्र व गुजरात) में रहती थी जो कि 1818 में अंग्रेजों के कब्जे में आ गया था। बाजीराव दितीय के मंत्री त्रिबंकची के उकसाने पर भीलों ने विद्रोह कर दिया।

5 कोल विद्रोह (1831-1832) छोटा नागपुर क्षेत्र के सिंहभूमि में कोलों को अपने मुखिया के अधीन स्वायत्तता प्राप्त थी परन्तु अंग्रेजों के आने से उनकी स्वतत्रता के लिए खतरा पैदा हो गया। बाद में अंग्रेजी हस्तातरण कानून, साहूकार व व्यापारियों के आने से विद्रोह बढ़ गया जिसे दबाने के लिए अंग्रेजों को बाहर से सैनिक टुकडियाँ मगवानी पड़ी।

6 मैप्पिला विद्रोह (1836-1854) - मैप्पिला भाड़े पर खेतीबाड़ी करने वाले भूमिहीन मजदूर व मालाबार क्षेत्र के मछुआरे मुसलमान थे | इस क्षेत्र पर अंग्रेजों द्वारा अधिकार करने व नए भूमि कानूनों की वजह से मैप्पिलाओं ने विद्रोह कर दिया | जिसको दबाने में अंग्रेजों को काफी वर्ष लगे।

1857 का विद्रोह - कारण, दमन, व परिणाम

1857 का विद्रोह 10 मई को जब आरम्भ हुआ था। तब भारतीय सैनिकों ने मेरठ में बगावत शुरू कर दी। अंग्रेजों ने इसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया परन्तु अब इसे स्वाधीनता प्राप्ति का प्रथम युद्ध माना जाता है। विद्रोही दिल्ली के लाल किले में प्रवेश कर गए व शांतिहीन मुग़ल शासक बहादुर जफ़र को अपना सम्राट घोषित कर दिया। यह विद्रोह अंग्रेजों की आक्रामक साम्राज्यिक नीतियों के विरुद्ध एक बड़ा औपनिवेशिक विरोधी आन्दोलन था।

विद्रोह के कारण

(क) राजनैतिक कारण :- अंग्रेज अपने देश से अधिक से अधिक धन की उगाही करना चाहते थे। सहायक संधि के आधार पर छोटे छोटे राज्यों का हडपना, गोद प्रथा में अंग्रेजो द्दारा हस्तक्षेप, लोगों के बुनियादी रहन सहन, पारम्परिक विश्वास, मान्यताओं व मानकों में अंग्रेजी हस्तक्षेप आदि।

(ख) आर्थिक कारण :- भारत से संपदा की लूटपाट व धन निकासी हेतु अनुचित उपाय किये गए। प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था का विघटन कर उसे अंग्रेजी अर्थव्यवस्था के अधीन कर दिया। कच्चा माल खरीदने व अंग्रेजों द्वारा

अपना माल बेचने हेतु 1853 में डलहोजी ने कोलकाता से आगरा तक प्रथम टेलीग्राफिक लाइन खोली व भारतीय डाकसेवा की शुरुआत की।

(ग) सामाजिक व धार्मिक कारण :- अंग्रेज भारतीय जनमानस की भावनाओं के प्रति संवेंदनशील नहीं थे। सती प्रथा, शिशु हत्या का विरोध, विधवा पुर्नविवाह व महिला शिक्षा जैसे मुद्दों ने अनेक भारतीयों को नाराज कर दिया। लोगों को इसाई बनाने के उद्देश्य से स्कूल व कोलेज खोले गए। 1806 में मद्रास प्रेसिडेंसी में सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुचाई गई। समुद्र पार भेजना भारतीयों को अच्छा नही लगा। समुद्र पार यात्रा का तात्पर्य होगा अपनी जा से बाहर हो जाना।

(घ) सेना में असंतोष :- भारतीय सैनिकों के हितों की अनदेखी की गई व उनके साथ क्रूरता का व्यवहार किया जाता था | समुद्र पार ड्यूटी पर भेजना जिसे भारतीय पसंद नही करते थे।

(ड) तत्कालीन कारण :- सरकार ने पुरानी बन्दूक (मस्केट) ब्राउन बैग्स को बदलकर 'एनफील्ड राइफल्स' में बदल दिया | जिसे बारूद भरने की प्रक्रिया में कारतूस को मुंह तक लाकर उसके ढक्कन को दांतों से काटकर खोलना पड़ता था। जनवरी 1857 में सैनिक में अफवाह फ़ैल गई की चिकनाई लंगे कारतूस में गाय व सूअर की चर्बी है | अत: सैनिकों ने विद्रोह कर दिया|

विद्रोह के चरण :-

मंगल पांडे पहला ऐसा सैनिक था जिसने विद्रोह का आरम्भ करते हुए 29 मार्च 1857 में बैरकपुर में दो अंग्रेज अफसरों की हत्या कर दी। उसके बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया | जहाँ पर घुड़सवार (कैवेलरी) रेजिमेंट के 85 सैनिकों को चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग करने से इनकार करने पर 2-10 वर्षो की सजा दी गई। 10 मई 1857 को देश के कई जगह विद्रोह शुरू हो गया। दिल्ली में बहादुरशाह जफ़र को राजा घोषित कर दिया गया। वहीं कानपुर में नाना साहब को पेशवा घोषित कर उनकी सेना की कमान तात्या टोपे व अजीममुल्ला ने संभाली। लखनऊ में बेगम हजरत महल की सहायता मौलवी अहमदुल्ला ने की। झाँसी में रानी लक्ष्मी बाई व आरा कुवर सिह ने विद्रोह का नेतृत्व किया। बरेली में विद्रोह के नेता थे खान बहादुर खान। अपनी खोई प्रतिष्ठा को बचाने के लिए अंग्रेजों ने पंजाब से सैन्य सहायता लेकर घेराबंदी की व 4 माह बाद 10 सितम्बर 1857 को दिल्ली फतह कर ली। यह युद्ध 10 माह चला। गवर्नर लार्ड कैनिग ने 8 जुलाई 1858 को विद्रोह के समापन की घोषणा कीा लक्ष्मी बाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई। तात्या टोपे को सोते हुए पकड़ लिया गया व बाद में फांसी दे दी गई। बहादुरशाह जफ़र को देश निकाला दे कर रंगून भेज दिया गया। 1867 में 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया उनके पुत्रों को दिल्ली में ही गोली मार दी गयी इस तरह प्रथम स्वाधीनता संघर्ष असफल हो गया।

विद्रोह की प्रकृति

यदि आप 1857 के तथ्यों का गहरे से अध्यन करें तो पायेंगे की विद्रोह की शुरुआत सैनिक द्वारा की गयी परन्तु बड़ी संख्या में असैनिक मानस भी इसके साथ जुड़ गए थे। इसमें कोई संदेह नही कि 1857 में पहली बार विभिन्न जातीय हिन्दुओं व मुसलमानों से भारतीय सेना के लिए चयनित सैनिक, जमींदार व किसान एकजुट होकर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ हुए। स्पष्टतया यह एक लोकप्रिय विद्रोह था। जिससे लगभग सभी भारतीय वर्गों में एकता का संचार किया।

विद्रोह की असफलता

एक संगठित व शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने हेतु हमारे पास बहुत कम अवसर थे। विद्रोह की असफलता के कई कारण थे, जैसे -

1) बागियों के उद्देश्य में एकरूपता का अभाव, 2) कश्मीर, पंजाब, सिंध व राजपूताना विद्रोह से दूर रहे। 3) उच्च व शिक्षित वर्ग ने विद्रोह का समर्थन नहीं किया, 4) विद्रोहियों के पास अस्त्र - शस्त्र व धन का अभाव था।

विद्रोह की सार्थकता व प्रभाव - 1857 के विद्रोह का प्रथम लक्षण था कि भारतीय अंग्रेजी शासन को समाप्त करना चाहते थे और इस लक्ष्य प्राप्ति हेतु व संगठित कक्ष से खड़े होने के लिए भी तैयार थे। हालाँकि वह अपने उद्देश्य प्राप्त करने में असफल रहे। यद्दपि ये सभी भारत में राष्ट्रीयता का बीज बोने में सफल जरुर रहे | यही से अंग्रेजी शासन द्वारा फूट डालो व राज करो की नीति की शुरुआत हुई। जिससे हिन्दू मुस्लिम आपस में अविश्वासी होने लगे ।